B.A. PART-1.
हिन्दी (प्रतिष्ठा) प्रथम-पत्र
हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रश्न:- आदिकाल के प्रमुख रचनाकार अमीर खुसरो पर संक्षिप्त नोट लिखें?

उत्तर:- अमीर खुसरो का वास्तविक नाम अब्दुल हसन था। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के एटा जिले के अन्तर्गत आने वाले पटियाली कस्बे में 1255 ई० में हुआ था। डॉक्टर ईश्वरीप्रसाद के अनुसार— "अमीर खुसरो कवि, योद्धा और क्रियाशील मनुष्य थे।" इनके गुरु का नाम निजामुद्दीन औलिया था। इन्होंने 1283 ई० के आस-पास अपनी रचनाएँ लिखनी प्रारम्भ कर दी थीं। ये बड़े विनोदी और सहृदय व्यक्ति थे। खुसरो का लिखा हुआ साहित्य प्रायः मनोरंजक है। उन्होंने जनता के मनोरंजन के लिए पहेलियाँ और मुकरियाँ लिखीं। खुसरो द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या के बारे में मतभेद [redacted] है। कुछ विद्वान जहाँ उनकी रचनाओं की संख्या 100 से ऊपर बताते हैं, वहीं कुछ उसे बीस-इक्कीस तक ही सीमित कर देते हैं। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं— खालिकबारी, पहेलियाँ, मुकरियाँ, दो सुखने, गजल आदि।

इनकी रचनाओं के कुछ नमूने इस प्रकार हैं—

पहेली— एक थाल मोती से भरा। सब के सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे। मोती उससे एक न गिरे॥

[redacted]— [redacted]

दो सुखने— पथिक क्यों प्यासा? गधा क्यों [redacted] उदासा?
पान सड़ा क्यों? घोड़ा अड़ा क्यों?

[redacted]— [redacted]।

ढकोसला— खीर पकाई जतन से चरखा दिया चला।
आया कुत्ता खा गया अब बैठी ढोल बजा

[redacted]— [redacted]

अमीर खुसरो ने मिली-जुली भाषा में भी काव्य रचना की है जिसमें एक पंक्ति हिन्दी की है तो दूसरी पंक्ति फारसी की है।
जैसे —

जेहाल मिसकी मुकुन तगाफुल दुराय नैना बनाए बतियाँ।
किताबें हिज्राँ नदारम एजां न लेहु काहे लगाय छतियाँ॥

कहा जाता है कि अमीर खुसरो के गुरु निजामुद्दीन औलिया की मृत्यु जब हुई, तब ये गयासुद्दीन तुगलक के साथ बंगाल में थे। गुरु की मृत्यु का समाचार सुनकर ये दिल्ली पहुँचे और उनकी कब्र के निकट निम्न दोहा पढ़कर बेहोश हो गए।

गोरी सोवै सेज पर मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस॥

कुछ ही दिनों बाद 1325 ई० में उनकी मृत्यु हो गई। खुसरो अपने समय के प्रमुख संगीतज्ञ थे। ध्रुपद के स्थान पर कव्वाली बनाकर इन्होंने नये राग बनाये थे जो अब तक प्रसिद्ध हैं। सितार के आविष्कर्ता भी खुसरो ही माने जाते हैं। इनकी एक प्रसिद्ध पंक्ति इस प्रकार है—

"लाज-शरम सब छीनी रे मोसे नैना मिलाय के।"

खुसरो का विशेष महत्व उनके द्वारा आदिकाल में प्रयुक्त काव्य की भाषा खड़ी बोली हिन्दी के कारण है। इनकी जैसी साफ-सुथरी भाषा लिख सकने में उस काल का कोई व्यक्ति सफल नहीं हुआ। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार—"खुसरो के समय में बोलचाल की स्वाभाविक भाषा घिसकर बहुत कुछ उसी रूप में आ गई थी जिस रूप में उनके काव्य में मिलती है। कबीर की अपेक्षा खुसरो का ध्यान बोल-चाल की भाषा की ओर अधिक है।" डॉ० रामकुमार वर्मा के अनुसार—"खुसरो का काव्य मनोरंजन की सामग्री है। जीवन की गंभीरता से ऊबकर कोई भी व्यक्ति उससे विनोद पा सकता है। पहेलियों, मुकरियों और सुखनों के द्वारा उन्होंने कौतूहल और विनोद की सृष्टि की है।"

निश्चय ही खुसरो की विनोदी वृत्ति हिन्दी साहित्य के इतिहास का मनोरंजक साहित्य दे सकने में सफल रही है। उनका मौलिक काव्य जो खड़ीबोली में रचित है हिन्दी का अमूल्य निधि है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न— अमीर खुसरो पर एक नोट लिखें ?

पता—
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग— हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.V.M)
मो० नं०- 7909046087
दिनांक — 20 / 02 / 2023